पाठ 7

अकारांत पुंलिंग व नपु. लिंग और आकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं तथा सर्वनामों के तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों के रूप; एक वार्तालाप.

7.1 सं. अकारांत पुंलिंग संज्ञा **बालक** के तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों (करण कारक, संप्रदान कारक और अपादान कारक) के रूप नीचे दिए गए हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	**बालकेन**	**बालकाभ्याम्**	**बालकै:**
चतुर्थी	**बालकाय**	**बालकाभ्याम्**	**बालकेभ्य:**
पंचमी	**बालकात्**	**बालकाभ्याम्**	**बालकेभ्य:**

अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों में अकारान्त पुंलिंग संज्ञाओं की तरह चलते हैं। तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों में आप **वन** के रूप **बालक** के रूपों के समान **वनेन**, **वनाभ्याम्, वनै:** आदि बना सकते हैं।

आकारान्त स्त्रीलिंग **बालिका** के तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों के रूप नीचे दिए गए हैं-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	**बालिकया**	**बालिकाभ्याम्**	**बालिकाभि:**
चतुर्थी	**बालिकायै**	**बालिकाभ्याम्**	**बालिकाभ्य:**
पंचमी	**बालिकाया:**	**बालिकाभ्याम्**	**बालिकाभ्य:**

यहाँ ध्यान दें कि तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों के द्विवचन में रूप एक जैसे हैं तथा चतुर्थी और पंचमी के बहुवचन के रूप भी समान हैं। यह सभी संज्ञाओं पर समान रूप से लागू होती है।

7.2 सं. तृतीया विभक्ति (करण कारक) का प्रयोग मुख्य रूप से निम्नलिखित संदर्भों में होता है-

क) किसी कार्य के साधन के रूप में; जैसे, वयं **नेत्राभ्यां** पश्याम:—हम ऑखों से देखते हैं।

ख) सह (साथ) और **विना** (बिना) आदि अव्ययों के साथ; जैसे, पिता पुत्रेण **सह** गच्छति—पिता पुत्र के साथ जा रहा है। वयं पुस्तकेन **विना** न पठाम:- हम पुस्तक के बिना नहीं पढ़ते। **विना** के साथ कर्मकारक का प्रयोग भी कर सकते हैं; जैसे, पुस्तकं **विना** न पठाम:।

ग) स्वभाव से, नाम को जैसे प्रयोगों के साथ; जैसे, **स्वभावेन** सरलः— स्वभाव से सीधा।

घ) अलम् के साथ; जैसे, **अलं** शोकेन—बस, अब और शोक न करो।

7.3 सं. चतुर्थी विभक्ति (संप्रदान कारक) का प्रयोग मुख्य रूप से नीचे दिए संदर्भों में होता है-

क) देना, भेजना, प्रतिज्ञा करना आदि अर्थवाली क्रियाओं के गौण कर्म की ओर संकेत करने के लिए; जैसे, सः बालिकाभ्यः फलानि **यच्छति**—वह लड़कियों को फल दे रहा है।

ख) कार्य का **प्रयोजन** बताने के लिए; जैसे, सः **ज्ञानाय** पुस्तकानि पठति—वह ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुस्तकें पढ़ता है।

ग) नमः (नमस्कार करना), **स्वस्ति** (कल्याण होना) के साथ; जैसे, ईश्वरायः **नमः**— हम ईश्वर को नमन करते हैं। स्वस्ति सर्वेभ्यः जनेभ्यः- सब लोगों का कल्याण हो।

घ) क्रिया के ऐसे कर्मों के साथ जिनसे **इच्छा करना, पसंद करना, अच्छा लगना, क्रोध करना** आदि का बोध होता हो; जैसे, मह्यं दुग्धं रोचते- मुझे दूध अच्छा लगता है। सः बालकेभ्यः कुप्यति- वह लड़कों पर क्रोध करता है।

7.4 सं. पंचमी विभक्ति (अपादान कारक) का प्रयोग मुख्य रूप से निम्नलिखित संदर्भों में होता है-

क) जिस स्थान से कोई क्रिया आरम्भ होती है उस स्थान के साथ; जैसे **छात्रः विद्यालयात्** आगच्छति- छात्र विद्यालय से आ रहा है।

ख) 'रक्षा करना', 'डरना' से **बाज आना** आदि क्रियाओं के संदर्भ में संज्ञाओं के साथ; जैसे, **ईश्वरः मनुष्यान् दुःखेभ्यः रक्षति**—ईश्वर मनुष्यों की दुखों से रक्षा करता है। **अत्र चौरेभ्यः भयम् न अस्ति**—यहाँ चोरों का डर नहीं है।

ग) किसी कार्य के **कारण** या **प्रयोजन** की अभिव्यक्ति के लिए; जैसे, **सः क्रोधात् गृहं त्यजति**—वह गुस्से के कारण घर छोड़ता है।

घ) पूर्वम् (पहले), **प्राक्** (पहले, पूर्व दिशा में), **अनन्तरम्** (बाद में), **बहिः** (बाहर), **ऋते** (बिना) आदि अव्ययों के साथ; जैसे, **सः भोजनात् पूर्वं मंत्रं पठति**— खाने से पहले वह मंत्र बोलता है। **ग्रामात् बहिः वाटिका अस्ति**—गाँव से बाहर बाग है।

7.5 सा. संस्कृत उपसर्ग. संस्कृत में कुछ उपसर्गों का धातुओं के साथ प्रयोग करने से उनके अर्थ में काफी परिवर्तन हो जाता है; जैसे, **गम्** धातु का अर्थ जाना है। यदि **गम्** धातु से पूर्व **आ** उपसर्ग जोड़ दिया जाए तो यह **'आगम्'** हो जाती है जिसका अर्थ **आना** है। **सः गृहं गच्छति**—वह घर जा रहा है। **सः गृहाद् आगच्छति**—

वह घर से आ रहा है। **नी** का अर्थ (ले जाना) है। इससे पूर्व **आ** उपसर्ग जोड़ दें तो इसका अर्थ लाना हो जाता है। **सः बालकान् नगरं नयति**—वह लड़कों को शहर ले जाता है। **सः पुष्पाणि आनयति**—वह फूल ला रहा है। इसी तरह **भू** (होना, हो जाना) धातु के साथ **अनु** उपसर्ग जोड़ दिया जाए तो इसका अर्थ होता है **अनुभव करना**; जैसे, **अहं शीतम् अनुभवामि**—मुझे ठंड लग रही है। यदि **भू** धातु के साथ **सम्** उपसर्ग जोड़ दें तो इसका अर्थ होगा **संभव होना**; जैसे, **सर्वं संभवति**—सब कुछ संभव है।

7.6 प. नीचे दिए वाक्यों को बोलकर पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. पिता परिवाराय धनम् आनयति[1]। 2. छात्राः विद्यालयात् बहिः आगच्छन्ति। 3. ईश्वराय नमः। 4. वृक्षेभ्यः पत्राणि पतन्ति। 5. माता पुत्राय भोजनं पचति[2]। 6. वयं भोजनात् अनन्तरं गृहात् बहिः गच्छामः। 7. जनाः[3] अत्र दुःखम् अनुभवन्ति[4]। 8. ते सुखम् अपि अनुभवन्ति। 9. सुखेन सह दुःखम् आगच्छति। 10. दुःखेन सह सुखम् अपि आगच्छति। 11. सा स्वभावेन शान्ता। 12. अहं धनेन जीवामि[5] किन्तु धनाय न जीवामि। 13. अद्य अहं किमपि[6] न खादामि। 14. अहम् एतानि पुस्तकानि ताभ्यः बालिकाभ्यः यच्छामि। 15. सः एताभ्यः बालिकाभ्यः पुष्पाणि यच्छति। 16. पिता पुत्राय कुप्यति[7]। 17. उद्यमेन[8] सर्वाणि कार्याणि संभवन्ति।

(**शब्दार्थ**:—1. लाता है, 2. पकाती है, 3. लोग, 4. अनुभव करते हैं, 5. जीता हूँ, 6. कुछ भी, 7. गुस्सा होता है, 8. मेहनत से, परिश्रम से।)

7.7 सर्व. अस्मद् और **युष्मद्** सर्वनाम के तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों के रूप नीचे दिए गए हैं:

		अस्मद्	
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	**मया**	**आवाभ्याम्**	**अस्माभिः**
चतुर्थी	**मह्यम्** (मे)	**आवाभ्याम्** (नौ)	**अस्मभ्यम्** (नः)
पंचमी	**मत्**	**आवाभ्याम्**	**अस्मत्**
		युष्मद्	
तृतीया	**त्वया**	**युवाभ्याम्**	**युष्माभिः**
चतुर्थी	**तुभ्यम्** (ते)	**युवाभ्याम्** (वाम्)	**युष्मभ्यम्** (वः)
पंचमी	**त्वत्**	**युवाभ्याम्**	**युष्मत्**

टिप्पणी: अस्मद् और **युष्मद्** के **द्वितीया** और **षष्ठी** विभक्ति के वैकल्पिक रूपों के समान चतुर्थी के वैकल्पिक रूपों का भी बहुत कम प्रयोग होता है।

तद् के तृतीया, चतुर्थी और पंचमी विभक्तियों के रूप निम्नलिखित हैं:

	पुंलिंग और नपु. लिंग			स्त्रीलिंग		
	एकव.	द्विव.	बहुव.	एकव.	द्विव.	बहुव.
तृ.	**तेन**	**ताभ्याम्**	**तैः**	**तया**	**ताभ्याम्**	**ताभिः**
च.	**तस्मै**	**ताभ्याम्**	**तेभ्यः**	**तस्यै**	**ताभ्याम्**	**ताभ्यः**
पं.	**तस्मात्**	**ताभ्याम्**	**तेभ्यः**	**तस्याः**	**ताभ्याम्**	**ताभ्यः**

तद् सर्वनाम की तरह आप **सर्व, यद्** और **किम्** के रूप भी इन तीनों विभक्तियों में बना सकते हैं। आप केवल **तद्** के रूपों में **त** के स्थान पर **सर्व, य** और **क** का प्रयोग कीजिए, जैसेः

केन काभ्याम् कैः , कस्मै काभ्याम् केभ्यः
येन याभ्याम् यैः , यस्मै याभ्याम् येभ्यः
सर्वेण सर्वाभ्याम् सर्वैः , सर्वस्मै सर्वाभ्याम् सर्वेभ्यः, आदि

7.8 प. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. तानि पुष्पाणि ताभ्यः बालिकाभ्यः सन्ति। 2. सः मह्यं मधुराणि फलानि यच्छति। 3. अहमद्य तैः बालकैः सह नगरं गच्छामि। 4. किं यूयमपि अस्माभिः सह नगरम् आगच्छथ? 5. न, अद्य वयं नगरं न गच्छामः, ग्रामं गच्छामः। 6. वयम् अत्र सुखम् अनुभवामः, किमपि कष्टं न अनुभवामः। 7. अहं तस्मात् बालकात् तुभ्यं पुष्पाणि आनयामि। 8. तत् पत्रम् अपि तुभ्यम् अस्ति, मह्यं न अस्ति। 9. अस्मभ्यम् अत्र किम् अस्ति? 10. तानि चित्राणि युष्मभ्यं सन्ति। 11. अहं त्वया सह क्रीडामि किन्तु तेन बालकेन सह न क्रीडामि। 12. एतानि फलानि कस्यै सन्ति? 13. एतानि फलानि तस्यै बालिकायै सन्ति। 14. वयम् ईश्वरं स्मरामः, तस्मै नमामः च। 15. ओम् नमः शिवाय।

7.9 अ. नीचे कुछ संस्कृत के वाक्य/वाक्यांश दिए हैं, आप समान अर्थ वाले हिन्दी वाक्यांशों के पूर्व दिए गए अक्षर उनके सामने लिखिएः

1.	**तस्यै बालिकायै**	**क.**	उस लड़की के लिए
2.	**तेषां बालकानाम्**	**ख.**	उन लड़कों का
3.	**तयोः बालकयोः**	**ग.**	उन (दोनों) लड़कों का/में, पर
4.	**ताभ्यां बालिकाभ्याम्**	**घ.**	उन दो लड़कियों से/के लिए
5.	**मधुरे फले**	**ङ**	(दो) मीठे फल
6.	**मधुराणि फलानि**	**च.**	(बहुत से) मीठे फल
7.	**विशालाय वनाय**	**छ.**	बड़े जंगल के लिए
8.	**विशालस्य वनस्य**	**ज.**	बड़े जंगल से
9.	**विशालात् वनात्**	**झ.**	बड़े जंगल का

10.	**ते बालिके पश्यत:।**	**ञा.**	वे दो लड़कियाँ देखती हैं
11.	**तस्या: बालिकाया:**	**ट.**	उस लड़की का
12.	**ते पश्यन्ति।**	**ठ.**	वे लड़के देखते हैं

7.10 प. वार्तालाप

1. **शेखर:**— कुत्र गच्छति भवती?
2. **मालिनी**— अहं वाटिकां गच्छामि।
3. **शेखर:**— तत्र भवती किं करोति?
4. **मालिनी**— अहं तत्र क्रीडामि।
5. **शेखर:**— भवती केन सह क्रीडति?
6. **मालिनी**— अहं ताभिः बालिकाभिः सह क्रीडामि। ताः बालिकाः मया सह क्रीडन्ति। भवान् कुत्र गच्छति?
7. **शेखर:**— अहम् अधुना गृहात् आगच्छामि, विद्यालयं गच्छामि।
8. **मालिनी**— भवान् तत्र किं करोति?
9. **शेखर:**— अहं तत्र पठामि। मया सह ते बालकाः अपि पठन्ति।
10. **मालिनी**— इदं पुस्तकं कस्मै अस्ति?
11. **शेखर:**— इदं पुस्तकं मम मित्राय अस्ति। इदं संस्कृतस्य पुस्तकम्। अति रोचकम् अस्ति।
12. **मालिनी**— अपि इदं पुस्तकं सरलम् अस्ति?
13. **शेखर:**— अति सरलम् अस्ति। संस्कृत भाषा कठिना न अस्ति। सरला अस्ति।
14. **मालिनी**— सः जनः कः अस्ति।
15. **शेखर:**— स जनः अस्माकं शिक्षकः अस्ति। निकटे एव वसति। अधुना अहं विद्यालयं गच्छामि। नमस्ते।
16. **मालिनी**— अहं वाटिकां गच्छामि। नमस्ते।

7.11 अ. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

1. अध्यापक उन लड़कों के साथ शहर जा रहा है। 2. मैं ये सारी पुस्तकें तुम्हें (युष्मद्, बहुव.) दे रहा हूँ। 3. क्या आप (भवान्) उस गाँव से आ रहे हैं? 4. नहीं, मैं शहर से आ रहा हूँ। 5. हमारे गाँव के चारों ओर जंगल है। 6. वह मुझे कभी नहीं छोड़ता। 7. उसकी माता जी उसे सुबह गरम दूध देती हैं। 8. लड़के लड़कियों के साथ बाग में खेल रहे हैं। 9. वह घर से बाहर जा रहा है। 10. मैं तुम्हारे बिना विद्यालय नहीं जा रहा हूँ।

अभ्यासों के उत्तर

7.6 1. पिता जी परिवार के लिए धन लाते हैं। 2. विद्यार्थी विद्यालय से बाहर आ रहे हैं। 3. ईश्वर को नमस्कार हो। 4. पेड़ों से पत्तो गिर रहे हैं। 5. माता बेटे के लिए खाना पका रही है। 6. हम भोजन के बाद घर से बाहर जाते हैं। 7. लोग यहाँ दुःख अनुभव करते हैं। 8. वे सुख भी अनुभव करते हैं। 9. सुख के साथ दुःख आता है। 10. दुःख के साथ सुख भी आता है। 11. वह (लड़की) स्वभाव से शांत है। 12. मैं धन के द्वारा जीता हूँ लेकिन धन के लिए नहीं जीता। 13. मैं आज कुछ भी नहीं खा रहा हूँ। 14. मैं ये पुस्तकें उन लड़कियों को दे रहा हूँ। 15. वह इन बालिकाओं को फूल दे रहा है। 16. पिता बेटे पर क्रोध कर रहा है। 17. परिश्रम से सब काम संभव होते हैं।

7.8 1. ये फूल उन लड़कियों के लिए हैं। 2. वह मुझे मीठे फल दे रहा है। 3. मैं आज उन लड़कों के साथ शहर जा रहा हूँ। 4. क्या आप भी हमारे साथ शहर आ रहे हैं? 5. नहीं, आज हम शहर नहीं जा रहे हैं, गाँव जा रहे हैं। 6. हम यहाँ सुख का अनुभव कर रहे हैं, किसी भी प्रकार के कष्ट का अनुभव नहीं कर रहे हैं। 7. मैं उस लड़के से तुम्हारे लिए फूल ला रहा हूँ। 8. वह पत्र भी तुम्हारे लिए है, मेरे लिए नहीं है। 9. हमारे लिए यहाँ क्या है? 10. वे चित्र तुम्हारे लिए हैं। 11. मैं तुम्हारे साथ (स्त्री.) खेल रहा हूँ परन्तु उस लड़के के साथ नहीं खेल रहा हूँ। 12. ये फल किसके लिए हैं? 13. ये फल उस लड़की के लिए हैं। 14. हम ईश्वर का स्मरण करते हैं और उसे नमस्कार करते हैं। 15. हम शिव को नमस्कार करते हैं।

7.9 1. ग, 2. घ, 3. क, 4. ङ, 5. च, 6. ञ, 7. ज, 8. झ, 9. छ, 10. ठ, 11. ख, 12. ट।

7.10 1. आप कहाँ जा रही हैं? 2. मैं बगीचे में जा रही हूँ। 3. वहाँ आप क्या करती हैं? 4. मैं वहाँ खेलती हूँ। 5. आप किसके साथ खेलती हैं। 6. मैं उन लड़कियों के साथ खेलती हूँ। वे लड़कियाँ मेरे साथ खेल रही हैं। आप कहाँ जा रहे हैं? 7. मैं अब घर से आ रहा हूँ, विद्यालय जा रहा हूँ। 8. आप वहाँ क्या करते हैं? 9. मैं वहाँ पढ़ता हूँ, मेरे साथ वे लड़के भी पढ़ते हैं। 10. यह पुस्तक किसके लिए है? 11. यह पुस्तक मेरे मित्र के लिए है। यह संस्कृत की पुस्तक है। बहुत रोचक है। 12. क्या यह पुस्तक सरल है? 13. बहुत सरल है। संस्कृत भाषा कठिन नहीं है। सरल है। 14. वह व्यक्ति कौन है? 15. वह व्यक्ति हमारे अध्यापक हैं। पास ही रहते हैं। अब मैं विद्यालय जा रहा हूँ। नमस्ते। 16. मैं बगीचे में जा रही हूँ। नमस्ते।

7.11 1. शिक्षकः तैः बालकैः सह नगरं गच्छति। 2. अहम् एतानि सर्वाणि पुस्तकानि युष्मभ्यं यच्छामि। 3. किम् (अपि) भवान् तस्मात् ग्रामात् आगच्छति? 4. न, अहं नगरात् आगच्छामि। 5. अस्माकं ग्रामं परितः वनम् अस्ति। 6. सः मां कदापि न त्यजति। 7. तस्य माता प्रातः तस्मै उष्णं दुग्धं यच्छति। 8. बालकाः बालिकाभिः सह वाटिकायां क्रीडन्ति। 9. सः गृहात् बहिः गच्छति। 10. अहं त्वया विना विद्यालयं न गच्छामि।